कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) .....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में .....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय ..... हिन्दी .....

परीक्षा का दिन ..... शनिवार .....

दिनांक ..... 9/03/19 .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .....

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज का उपयोग में लिया गया है। 165/2019

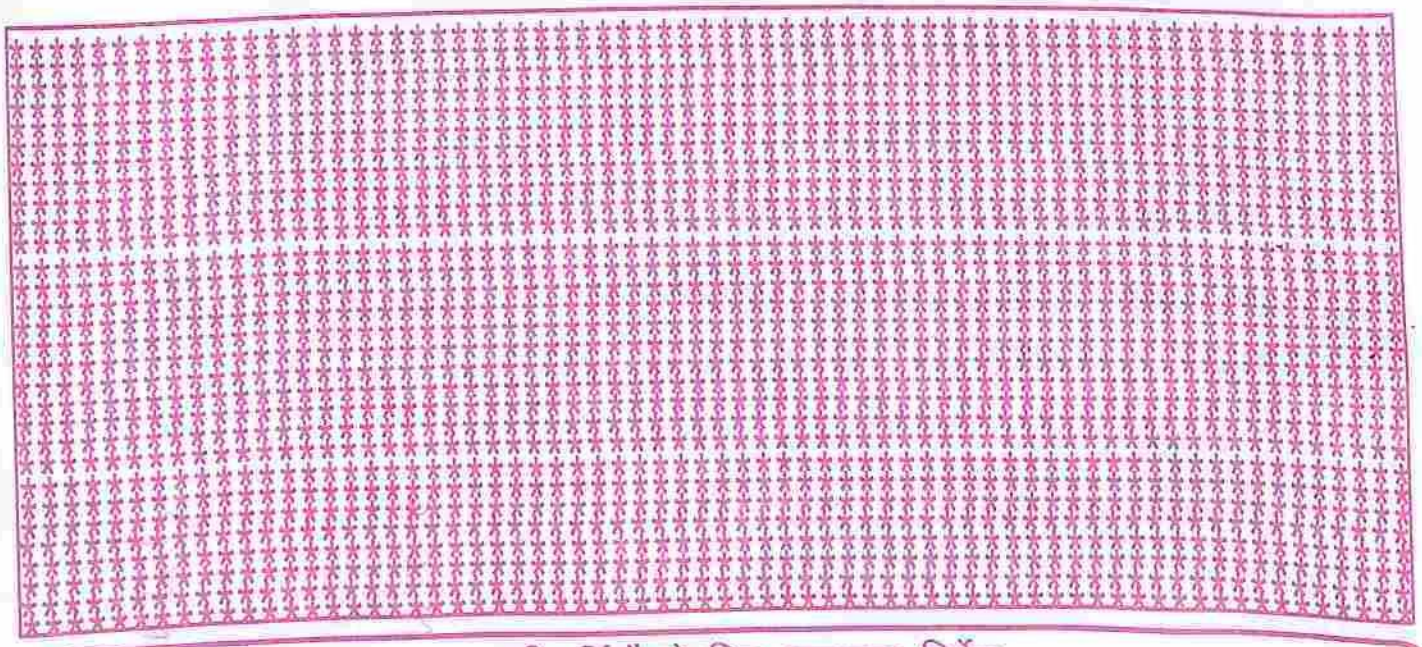

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर

1.

(अ) एक साहित्यकार का यह आदर्श होना चाहिए कि उसमें कर्मशक्ति का आभाव न हो। वर्तमान साहित्यकारों में कर्मशक्ति का आभाव है। जो एक अच्छे साहित्यकार को अपना कर्म करने से रोकता है।

(ब) धार्मिकता का अभिमान रखने वाला ईश्वर की दया का पात्र नहीं हो सकता क्योंकि इससे तो अच्छा है कि हमें 'खा-पीकर मौज करो' चाहिए। धर्म पर गर्व करना कोई अच्छी बात नहीं है। इसलिए धार्मिकता का अभिमान रखने वाला ईश्वर की दया का पात्र कभी नहीं हो सकता।

2.

(अ) उन्नति के संदर्भ में मनुष्य की यह विशेषता है कि मनुष्य उन्नति को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है और अगर वह असफल भी हो जाता है तब भी उसको पाने के लिए जी-जान लगा देता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है।

(ब) इस काव्यांश से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने लक्ष्य की ओर हमेशा अग्रसर रहना चाहिए। अगर हम असफल भी हो जाए तब भी वह और ताकत लगाकर उस लक्ष्य के पीछे लग

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

लग जाना चाहिए। और हमेशा प्रयत्न करते रहना चाहिए।

खण्ड – ख

(3)

(अ)

भाषा	बोली
① इसका क्षेत्र विस्तृत होता है।	① इसका क्षेत्र संक्षिप्त होता है।
② इसमें अपने साहित्य की रचना नहीं की जा सकती।	② इसमें अपने साहित्य की रचना की जा सकती है।
③ इसके अपने शब्दकोश एवं व्याकरण होती है	③ इसकी व्याकरण व शब्दकोश नहीं होती।

(ब) भाषा के दो रूप है।—
① मौखिक भाषा
② लिखित भाषा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(4)
(अ) वाह! कितना सुन्दर दृश्य है।

वाह! - विस्मयादिबोधक अव्यय, हर्ष का प्रतीक

(ब) वह रोज सुबह व्यायाम करता है।

रोज - कालवाचक क्रियाविशेषण, व्यायाम कर्म की क्रिया- विशेषता।

(5)
सुरेश .... करता है।
इस पंक्ति में लक्षणा शब्दशक्ति है।

इस पंक्ति में हवा से बातें करना लक्षणा शब्द शक्ति का प्रतीक है। क्योंकि 'हवा से बातें करना' इसका अर्थ होता है बहुत तेज खेलना। इसमें लक्षणों से प्रतीत होता है कि इसमें लक्षणा शब्द- शक्ति है।

(6) या अनुरागी - - - - - - - - उज्जवल होय।

इन पंक्तियों में विरोधाभास अलंकार है।

स्पष्टीकरण - इन पंक्तियों में बताया गया है कि जैसे-जैसे हम काले रंग में डूबते हैं वैसे-वैसे हमारा मन उज्जवल होता जाता है। जो विरोध प्रकट करता है। इसलिए विरोधाभास अलंकार है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(7)	
	(1)	Eligible - पात्रता
	(2)	Gazett - राजपत्र

BSEB-16/5/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(8)

अधिसूचना

राजस्थान सरकार
~~जयपुर~~ (राज.)

पत्र संख्या - 1010/र.ज.स/2017 दिनांक - 10/6/17

अधिसूचना

राजस्थान सरकार खादी ग्रामोद्योग के प्रति सतर्क है। राजस्थान सरकार इसके बढावे के लिए कई शहरो में ग्रामोद्योग मेले आयोजित कर रही है। जिससे जनसामान्य में खादी ग्रामोद्योग के प्रति जागरुकता बढ़े और खादी ग्रामोद्योग भारत ही नहीं पूरे विश्व में भारत का नाम रोशन करें।

राजस्थान सरकार
जयपुर (राज.)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(9)

मतदाता जागरण अभियान

"जन-जन का यह नारा है
अबकी बार मतदान स्वहता से करवाना है।"

① प्रस्तावना - हमारे देश में इस साल लोकसभा मतदान होने है। यह चुनाव भारत के भविष्य को तय करेंगे। यह चुनाव भारत के लिए बहुत महत्तव पूर्ण होंगें। परतु कुछ पार्टियां सत्ता पाने के चक्कर में गंदे तरीके चुनाव करवाने का प्रयास करेंगी जैसे अपराधियों को चुनाव में उतारना और पैसे देकर वोटरों को लुभाना इसलिए मतदाता जागरण अभियान चलाया गया तकि हमारे देश में मतदान शांती पूर्वक हो सकें।

② मतदाता जागरण अभियान का उद्देश्य - यह चुनाव भारत के भविष्य के लिए निर्णायक होगें। इन चुनावों से भारत की सत्ता तय होगी और भारत का भविष्य तय होगा। इन चुनावों को भ्रष्टाचार मुक्त करना तथा मतदाताओं को जागरुक करना कि वे किसी अच्छे नेता को वोट दे तकि भारत का विकास हो सके। यही इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(4) मतदाता जागरुक अभियान के प्रभाव –

इस मतदाता जागरुक अभियान के कई सकारात्मक पहलू देखने को मिल रहे हैं। इस अभियान ने लोगों को चुनावों के प्रती जागरुक किया। इससे इस साल वोटरों की संख्या में 5% की वृद्धि हुई है जो कि काफी सराहनिय है। भारत के जागरुक मतदाता इस चुनाव को लेकर काफी उत्सुक दिखाई दे रहे हैं। इन चुनावों में जाती, पैसों के लेन देन अपराधी गतिविधियों में भी काफी कमी आई। कुल मिलाकर यह अभियान अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल रहा।

(5) उपसंहार - केवल इस अभियान के चलाए जाने से ही मतदाता जागरुक नहीं हो सकते। मतदाताओं को खुद भी जागरुक होना पड़ेगा। और पैसों के लालच में न पड़कर जातिवाद से ऊपर उठकर इस चुनाव को सफल बनाना होगा। तभी भारत के संविधान की पूर्ती होगी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ग

(10) आ जा .... कुटिया मेरी।

सप्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित 'मेरा नया बचपन कविता' से लिया गया है। इसमें कवियित्री अपने बचपन को याद करती है तथा अपने बचपन को बेटी के रुप में आना बतलाती है।

व्याख्या - इस काव्यांश में कवियित्री कहती है कि वह अपने बचपन को बहुत याद कर रही है। वह कहती है कि हे बचपन। तुम फिर से आकर मुझे अपनी निर्मल शांती दे दो और जो किसी व्याकुल की व्यथा मिटाने वाली है। कवियित्री बचपन के बारे में कहती है कि जो बचपन में सरलता निष्पाप जीवन है वह और किसी भी काल में नहीं है। कवियित्री जब अपने बचपन को याद कर रही थी तभी उसकी नन्ही बिटिया आ जाता है। कवियित्री कहती है कि उसके आने से मुझे नंदन-वन सा प्रतीत हो रहा है।

विशेष

(1) इन पंक्तियों में कवियित्री अपने बचपन को याद करती है।
(2) इन पंक्तियों की भाषा सरल व सुलभ है।

परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या

(ii) जिस प्रकार - ——— - . पुरुषार्थ से।

सप्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' द्वारा रचित 'भय' से लिया गया है। इसमें कवि निर्भयता के संपादन के बारे में बताता है।

व्याख्या - इस गद्यांश में लेखक कहते हैं कि सुखी होना सभी का अधिकार है उसी प्रकार भय मुक्त होना भी। जिस प्रकार जो मनुष्य जीवन के चक्रव्यूह में पड़कर सुखी होना चाहता है। उसी प्रकार भय मुक्त होना भी। निर्भयता के संपादन के लिए दो बातें हैं। पहली तो यह कि हमें किसी से भय न हो इसका संबंध शक्ति व पुरुषार्थ है और दूसरों को हमसे कोई भय न हो। इसका संबंध उत्कृष्ट शील से है।

विशेष

(1) इसमें ~~कवि~~ लेखक ने निर्भयता के संपादन के बारे में बताया है।

(2) इसमें सरल एवं सहज भाषा से समझाया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(12) सहजता एंव सरलता से जीवन जीने में जो खुशी मिलती है वह खुशी बाह्य तड़क-भड़क मे नही। यह कथन बिल्कुल सत्य है। मधु एक आडंबर प्रीय महिला है। वह दिखावे में विश्वास रखती है तथा हमेशा स्वहता को लेकर आड़ंबर फैलाती रहती है। मधु हमेशा दुखी रहती है जबकि उसका पती हमेशा सदा जीवन व्यक्तित करता है। वह किसी भी बाह्यय तड़क-भड़क मे विश्वास नही करता। वह हमेशा सदा जीवन उच्च विचारों के जीवन को जीता है। तथा उसे जो मिला है उसी में सुखी रहता है। वह कभी-भी स्वहता के नाम पर आडंबर नही फैलाता। तथा हमेशा सुखी और सभी से हिल-मिल कर रहता है। इसलिए सहजता एंव सरलता से जीवन जीने में जो खुशी मिलती है वह बाह्य तड़क-भड़क में नही। बल्कि अंतर केवल दृढ़ता है।

(13)

परीक्षार्थी उत्तर

क्षक द्वारा दत्त अंक | प्रश्न संख्या

(13) ऊषा कविता में कवि ने प्रातः कालीन सूर्योदय का जीवन्त परिवेश का चित्रण किया है। कवि ने बताया है कि प्रातः काल का समय अद्भुत प्रतीत होता है। कवि ने ऊषा काल को राख का चौका बताया है। गाँवों में महिलाएं रसोई घर को साफ करने के लिए राख से उसको लीपती है। कवि ने ऊषा काल को काली सिल के समान बताया है जो गाँवों में मसाले पीसने आदि के काम आती है। कवि ने ऊषा काल को स्लेट के समान बताया है जो बच्चों को अक्षर ज्ञान करवाने के काम आती है। कवि ने ऊषा काल को सूर्य की किरणों को लाल खिड़िया के समान बताया है। इसलिए 'ऊषा' कविता में कवि ने प्रातः कालीन सूर्योदय को ग्रामीण परिवेश का बताया है। इसलिए 'उषा' कविता में कवि ने प्रातः कालीन सूर्योदय का जीवन्त परिवेश का चित्रण किया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(14) इन पंक्तियों का भावार्थ है कि सच्चे मित्र बिना कहे आपके मन की बात समझ लेते हैं तथा आपके कहे बिना उस पर कार्य करने लग जाते हैं जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने अर्जुन के रथ को हाँकना उनके एक बार कहने पर हाँकना शुरू कर दिया था। इन पंक्तियों में कवि ने सच्चे दोस्त एवं उनकी दोस्ती के बारे में उदाहरण के साथ समझाया है।

(15) गोपियों के लिए श्रीकृष्ण की स्मृति दिलाने वाली संतापदायक बन गई थी। श्रीकृष्ण की विरह में उन्हें वहाँ के कुंज उन्हें वैर के समान लगे तथा लताएँ आँगों की लपट निकलती हुई प्रतीत हुई। गोपियों को यमुना का स्वछंद प्रवाह, पक्षियों का चहचहाना कमल पुष्पों को खिलना सब व्यर्थ लगा। इसलिए गोपियों के लिए श्रीकृष्ण की स्मृति दिलाने वाली सभी वस्तुएँ संतापदायक बन गई।

(16) मेहनतकश लोगों को उनके श्रम के बदले हम उन्हें पैसे देते हैं और समझते हैं कि हमने अपना दायित्व निभा लिया। परंतु यह सही नहीं। मजदूर मेहनत करते समय अपने शरीर के

परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या

सभी अवयवों को हमें सौंप देते हैं। मेहनतकश लोगों में श्रम और मजदूरी के मूल्य केवल प्रेमभरी कृतज्ञता से ही चुकाया जा सकता है।

(17) लेखक ने कौसानी की तुलना स्विट्जरलैण्ड से की है क्योंकि भारत में कौसानी एक ऐसा स्थान है जहाँ स्विट्जरलैण्ड का सा अहसास होता है। कौसनी के पहाड़, वहाँ का वातावरण और वहाँ पर वर्फ वहाँ की शीतल हवाएँ सभी स्विट्जरलैण्ड की याद दिलाती हैं। तथा हमारे सभी त्रितापों को नष्ट करती हैं।

(18) हरिवंश राय बच्चन

जन्म – 1904
मृत्यु – 2003

हालावाद के पर्वतक कवि हरिवंश राय बच्चन छायावाद के एक प्रमुख कवी थे। उनके काव्य-यात्रा के पहले शुरुआती दौर में फारसी कवि उमर कैय्याम से काफी प्रभावित थे। उन्होंने उमर के रुबाइयों से प्रभावित होकर मधुबाला लिखा जो काफी सराहा गया। वे परस्पर लड़ाई के बजाय प्रेम को महत्त्व देते थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ - मधु मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश आदि हैं। उनके काव्य खंड - क्या भूलूं क्या याद रखूँ बसेरे से दूर, दसद्वार से सोपान तक काफी प्रसिद्ध हुई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(19) नायिका नायक को पत्र इसलिए नहीं लिख पा रही है क्योंकि नायिका को पत्र पर लिखते नहीं बन रहा था उसे कहने में भी शर्म आती और नायिका के हृदय की बात नायक के हृदय को अपने आप पता चल जाएगी। जैसे कि कहा है —

"कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेश लजात
कहिवे को मेरो हिय तेरे हिय की बात।"

(20) यह वाक्य ममता ने अकबर के सैनिकों से कहा था। जब वे हिमायुं के शेरशाह से पराजय के वक्त रुकने का स्थान ममता को पूछ रहे थे और कह रहे थे कि हिमायूं की रुकने के स्थान पर अष्टकोण मंदिर बनवाया जाएगा। तब ममता ने कहा 'अब तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर-विश्राम-गृह में जाती हूँ।"

परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या

खण्ड - घ

(21) यह वाक्य रत्नावली ने तुलसीदास से कहा था। जब रत्नावली आश्रम छोड़ कर जा रही थी। तब उसने तुलसीदास से कहा कि मेरे मरने से पहले मुझे अपना श्रीमुख दिखाने की कृपा करें। तब रत्नावली ने तुलसीदास से कहा कि "यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे आँचल पसारती हूँ।"

(22) खादी का जन्म - गाँधी जी अपने आश्रम गुजरात में थे। उनके पास कई करघे व चरखे थे। भारतीय लोगों को विदेशी कंपनियों से महंगे दामों में वस्त्र सिलवाने पड़ते थे। गाँधी जी ने इस समस्या के बारे में पूछा तो उन्हे पता चला कि मीलो महीन सूत काटने में सक्षम नहीं है वो उन्हे कपड़े विदेशों से लेने पड़ते है तो गाँधी जी ने चरखों से सूत कातने का कार्य आरंभ करवाया और कारीगर ढूँढे। इससे भारत में खादी का जन्म हुआ।

(23) हम गाय को गौ माता कहते है। गाय हमें सभी अवसरों पर दूध प्रदान करती है तथा हमारी रक्षा करती है। फिर भी इस देश के ग्वाले ने स्वार्थ के कारण गाय को गुड़ में चीनी खिला दी। और हम अपने आप को गोपालक देश कहते है। इसलिए महादेवी वर्मा ने कहा कि "यदि निःश्वास का शब्दों में अनुवाद हो सके, तो उसकी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(27) पत्रकारिता के निम्न लिखित क्षेत्र है —
1. खेल पत्रकारिता
2. अदालती पत्रकारिता
3. वैज्ञानिक पत्रकारिता
4. व्यापारिक पत्रकारिता
5. व्यक्तिपरस्थ पत्रकारिता
6. कानून पत्रकारिता

खेल पत्रकारिता – जब पत्रकारिता किसी खेल से संबंधी उनके खिलाड़ियों से संबंधी किसी खेल प्रतियोगिता में हो तो उसे खेल पत्रकारिता कहते है।

(28) रिपोर्ताज – रिपोर्ताज ~~अंग्री~~ अंग्रेजी भाषा का संशोधित रुप

परीक्षार्थी उत्तर

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या

(28) रिपोर्ताज - रिपोर्ताज अंग्रेजी भाषा के रिपोर्ट शब्द का संशोधित रुप है। इसमें घटनाओं को कलात्मक और मनोरंजक तरीके प्रस्तुत किया जाता है। जिससे मनुष्य उस खबर से जुड़ा रह सके।

रिपोर्ताज की विशेषताएँ —

(1) रिपोर्ताज में घटनाओं को कलात्मक और मनोरंजक रुप से प्रस्तुत की जाती है।

(2) रिपोर्ताज में मनोरंजन का स्थान होता है।

(3) रिपोर्ताज घटनाओं को इस तरह प्रस्तुत किया जाता है कि लोग उससे आनंदित हो।

(4) इसमें कल्पना के बल पर लिखा जाता है।

(29) साहित्य में डायरी लेखन का बहुत महत्व है। डायरी लेखन में मनुष्य अपने भावों तथा विचारों की तथा दिनभर की घटी सभी घटनाओं को इसमें लिखता है। डायरी लेखन एक महत्वपूर्ण कला है। इससे मनुष्य का साहित्य से जुड़ा हुआ महसूस होता है जो उस मनुष्य को साहित्यिक बनाता है। डायरी लेखन मनुष्य पूर्व में हुई गलती को सुधारने तथा दुबारा ऐसी गलती न करने के लिए प्रेरित करता है। साहित्य में डायरी का

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बहुत महत्त्व है। डायरी हमें साहित्य से जोड़कर रखती है।
डायरी प्रकाशन में कई पत्रिकाओं का ~~प्रक~~ लिखी गई है।

समाप्त

परीक्षक द्वारा दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर